'तेरा वर्ष'

सफलता सप्ताह

30.06.2013

1.स्वमान – मैं पद्मापद्म भाग्यशाली आत्मा हूँ।

- सारा संसार जिस भगवान को ढूँढ़ रहा है, जिसकी एक झलक पाने के लिए तरस रहा है, वो भगवान मुझे मिल गए हैं, मेरे हो गए हैं...होगा कोई मुझ सा सौभाग्यशाली जिसे लोरी सुनाकर सुलाते भी भगवान हों, उठाते भी भगवान हों, खिलाते भी भगवान हों, नहलाते भी भगवान हों...वाह रहे मैं...वाह मेरा श्रेष्ठ भाग्य...।

2. योगाभ्यास –

अ. बाबा कहते हैं कि तुम्हारे हर कदम में पद्म जमा होता है यदि तुम हर कदम मेरी याद में उठाते हो तो...तो इस सप्ताह हम पद्मापद्म भाग्यशाली आत्माएँ अपने हर कदम में बाबा को याद करने का लक्ष्य रखेंगे...हमारे हर कदम में बाबा-बाबा-बाबा निकले...।

ब. बाबा कहते हैं कि जिस श्वाँस में मेरी याद है, वही श्वाँस सफल है, बाकि निष्फल है...तो आएँ इस सप्ताह अपने हर श्वाँस में बाबा के याद की सुगंध घोलें...श्वाँसों-श्वाँस याद करें...अजपाजाप चलता रहे...।

स. बाबा कहते - मेरी याद की बिंदी लगाना एक के आगे शून्य लगाने जैसा है। जितनी बार तुम मुझे याद करते हो तो जैसे एक के आगे शून्य (10000...) लगता जाता है...तो आएँ अपने हर पल में ऐसी श्रेष्ठ कमाई करें..।

3. धारणा – समय और संकल्प को सफल करना

– 'दो बातों का अटेन्शन अण्डरलाइन करो – एक संकल्प का खजाना और दूसरा समय का खजाना...संगमयुग का समय एक सेकण्ड भी गंवाना नहीं है।` **– शिवभगवानुवाच**

- संगमयुग का एक सेकण्ड अन्य युगों के एक वर्ष के तुल्य है, इसलिए यदि एक सेकण्ड गँवाया तो एक सेकण्ड नहीं बल्कि एक वर्ष गँवा दिया।

- बीता हुआ समय फिर कभी लौटकर नहीं आता, इसलिए अपने समय को ऐसा सफल करें कि अपने पास्ट को देखकर संतोष हो न कि पश्चाताप।

4. स्वचिंतन –

- मैं अपने संगम के अमूल्य समय को कैसे बिता रहा हूँ?
- कहीं मेरा समय व्यर्थ की बातों में तो व्यतीत नहीं हो रहा है?
- क्या सोचता हूँ मैं सारे दिन? क्या सचमुच इन संकल्पों की आवश्यकता है?
- कैसे सफल करुँ मैं अपने एक-एक सेकण्ड और एक-एक संकल्प को? इसकी योजना बनाएँ।

5. तपस्वियों प्रति – प्रिय तपस्वियों ! ये कमाई का समय है और कमाई के समय पर कोई भी व्यापारी गफलत नहीं करता। साथ ही ये पढ़ाई का समय है। यदि पढ़ाई के समय कोई विद्यार्थी घूमता-फिरता रहे, व्यर्थ की गपशप करता रहे, सारा साल इसी में निकाल दे तो उसका रिजल्ट क्या होगा, आप जानते हैं...हमारी ये पढ़ाई पूरे कल्प के लिए है, बल्कि कल्प-कल्प के लिए है। अभी पास होंगे तो कल्प-कल्प पास होते रहेंगे, महाराजा-महारानी बनते रहेंगे और यदि अभी फेल हुए तो कल्प-कल्प फेल होते रहेंगे, दास-दासी बनते रहेंगे...तो इस समय का कितना महत्व है...क्या हम संगम के इस अमूल्य समय को इतना ही मूल्य देते हैं...?